4

ममता की पतवार

ममता की पतवार ना तोडी, आखिर को दम तोड दिया।
एक अनजाने राही ने, शिवपुर का मारग छोड दिया ।।टेक।।

नरक में जिसने भावना भायी, मानुषतन को पाने की।
भेष दिगंबर धारण कर के, मुक्ति पद को पाने की।।
लेकिन देखो आज ये हालत, ममता के दीवाने की।
चेतन होकर जड द्रव्यो से, कैसा नाता जोड लिया।।
एक अनजाने राही ने, शिवपुर का मारग छोड दिया ।।१।।

ममता के बंधन में बंधकर, क्या युग–युग तक सोना है ?
मोह अरीका सचमुच इसपर, हो गया जादु टोना है।।
चेतन क्या नरतन को पाकर, अब भी यूँ ही खोना है।
मन का रथ क्यों शिवमारग से, कुमारग को मोड दिया।।
एक अनजाने राही ने, शिवपुर का मारग छोड दिया ।।२।।

मत खोना दुनिया मे आकर, ये बस्ती अनजानी है।
जायेगा हर आनेवाला, जग की रीत पुरानी है।।
जीवन बन जाता यहाँ पंकज, सबकी एक कहानी है।
चेतन देखा निज स्वरूप तो, दुःख का दामन तोड दिया।।
एक अनजाने राही ने, शिवपुर का मारग छोड दिया ।।३।।

अज्ञानी जीव ने मोह ममत्व का पक्ष तो छोड़ा नहीं और इस मनुष्य पर्याय को व्यर्थ में गवाँ दिया। इस तरह मोक्षमार्ग से अनभिज्ञ जीव ने मोक्ष अर्थात् सुख के मार्ग का त्याग कर दिया।

जब यह जीव नरक गति में था तो वहाँ के दुःखों से डरकर इसने मनुष्य पर्याय की प्राप्ति की तथा दिगम्बर दीक्षा धारण करके मोक्ष पद को प्राप्त करने की भावना भाई थी। लेकिन मनुष्य पर्याय मिलने के बाद यह अपनी उस भावना को भूल गया और मोह में दीवाने इस जीव की आज ऐसी अवस्था हो गई कि इसने स्वयं चेतन द्रव्य होकर जड़ पुदगल द्रव्यों को अपना साथी मान लिया।

हे चेतन! मोह के बंधन में बंध कर क्या अनंत काल इस तरह ही व्यतीत करना है..? लगता है सचमुच इस चेतन आत्मा पर मोह शत्रु ने कोई जादू टोना सा कर दिया है जिससे इसे आत्मा का हित पसंद नहीं आता। हे चेतन! क्या इस दुलर्भ मनुष्य पर्याय को प्राप्त करके भी यूँ ही व्यर्थ में बरबाद करना है। पता नहीं क्यों यह अज्ञानी जीव अपने मन के रथ को मोक्ष के मार्ग से विपरीत संसार मार्ग की ओर ले जा रहा है।

हे चेतन! तुम इस क्षणभंगुर जगत के स्वरूप से अनजान हो। इसकी संगती में तुम अपने स्वरूप को मत भूल जाना। इस संसार में जन्म लेने वाले प्रत्येक व्यक्ति का मरण निश्चित ही है, यह तो इस संसार की अनादि काल की परम्परा है। कवि कहते हैं कि यहाँ सभी अज्ञानी जीवों का एक जैसा ही व्यवहार देखा जाता है पर जो मनुष्य पर्याय का सदुपयोग करता है और अपने स्वरूप को पहचानता है तो उसके समस्त दुखों का संयोग छूट जाता है तथा उसे सुख अर्थात् मुक्ति की प्राप्ति होती है ।